



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जांभाणी साहित्य में वन्य जीव संरक्षण

विष्णु शंकर

शोधार्थी, राजस्थानी विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

जीव दया नित राख, पाप नी कीजै ।
जाड़ी हिरण संहार, देख सिर दीजै ।।

सृष्टि रै अनादिकाल सूं पर्यावरण रौ अस्तित्व है। पर्यावरण रा रचयिता सृष्टिकर्ता है। युग युगांतर सूं ई पर्यावरण बदलतौ रैयौ है अर मानव जाति रौ अस्तित्व इण पर्यावरण माथै आधारित है। राजस्थान रा लोगां में वन अर वन्य जीवां या आन-बान माथै मर मिटण वाळी गौरवसाली परंपरावां, सांस्कृतिक धरोहरां नै आपरी मैणत अर कला प्रेम, सिरजणसीलता, प्राकृतिक विविधतावां सूं सिमरध बनायौ। प्राचीन काल सूं इज राजस्थान में वन्य जीवां रौ संरक्षण होवतौ रैयौ है। राज्य री केई रियासतां रा राजा-महाराजा आपरी रियासत में वन्य जीव बाहुल्य खेतर नै 'शिकारगाह' रै नांव सूं संरक्षित करता हा। इण शिकारगाह में राजपरिवार, राजा-महाराजा अर शाही मेहमान इज शिकार करिया करता हा। उण पछे ब्रिटिश काल में ई राजा-महाराजा, ब्रिटिश अधिकारियां रै सागै शिकार करिया करता हा। घणा शिकार होवण सूं पशु-पक्षियां री प्रजातियां लुप्त होवण लागगी अर केई दूजी प्रजातियां लुप्तहोयगी पण दूजै कांनी राजस्थान में वन्य जीव संरक्षण री अेक लांबी परंपरा रैयी है। सामाजिक जीवन रै केई उच्छब तिंवारां माथै इण पेड़-पौधां नै जोड़ियौ गयौ है।

वन्य जीवां रै संरक्षण रै खेतर में आथूणै राजस्थान में रैवण वाळा बिश्नोई समाज रौ गौरवसाली इतिहास रैयौ है। 15वीं सदी सूं महान समाज सुधारक अर दुनिया रा पैला पर्यावरण विद गुरु जांभोजी सूं प्राप्त शिक्षावां अर नियमां नै औ समाज सदियां सूं निभातवौ रैयौ है। गुरु जांभोजी री वाणी में पर्यावरण वन्य जीवां रै संरक्षण सारू संत- महात्मावां आपरै साहित्य अर कामां सूं उण टैम रा राजा महाराजावां नै पर्यावरण संरक्षण रौ आदेश पारित करण सारू मजबूर करिया। जोधपुर, नागौर, बीकानेर, जैसलमेर अर उदयपुर रै शासकां बिश्नोई समाज रै पर्यावरण प्रेम रै दबाव में केई पर्यावरण संरक्षण रा परवाना, आदेश अर नियम आप आपरै राज्यां में समै-समै जारी करिया-

- सन 1695 में बीकानेरे महाराजा अनोपसिंह मुकाम गांव रै खेतर में बिश्नोई लोगों री मांग माथै लीला वृक्ष नीं काटण रौ आदेश पारित करियौ।
- सन 1701 में बीकानेर महाराजा सुजानसिंह मुकाम में बिश्नोई लोगों नै जांभोजी री ओरण रै नांव सूं गोचर भूमि आवंटित करण रौ आदेश पारित करियौ।
- सन 1764 में जोधपुर रा महाराजा विजयसिंह रौ आदेश जिण सूं वन्य जीवां री रक्षा रै कारण बिश्नोई लोगों सूं कर अर बेगार नीं लेवण रौ आदेश पारित करियौ। इणी तरै रौ आदेश 1803 में महाराजा मानसिंह ई जारी करियौ।
- सन 1817 में उदयपुर रा महाराजा भीमसिंह गांव पुर निवासी बिश्नोईयां नै वन्य जीवां रै संरक्षण रै कारण केई तरै रा राजकीय करां सूं रियायत दी।
- सन 1821 में जोधपुर महाराजा मानसिंह खेजड़ी नीं काटण रौ आदेश पारित करियौ। आदेश सामराऊ गांव रै संबंध में दियौ।
- सन 1843 में जोधपुर महाराजा तखतसिंह बिश्नोई गांवां रै खेतर में हरी खेजड़ी नीं काटण रौ अर शिकार नीं करण रौ विसेस आदेस जारी करियौ अर आदेस री अवमानना करण वाळां नै सरकार रौ दोसी मान्यौ जावण रौ आदेस दियौ।
- सन 1852 में उदयपुर महाराणा स्वरूपसिंह भीलवाड़ा रा गांव दरीबा में बिश्नोई साधु नै केई बीघा जमीन बावड़ी सागै पेड़ां रै संरक्षण वास्तै देवण रौ आदेस निकाळियौ।
- सन 1873 में बीकानेर अदालत रौ आदेश जिण में मुकाम गांव री सरहद में पकड़ी गयी भेड़ां नै बिना जुरमाना छोडण रौ आदेस दियौ। इणरौ कारण औ हौ कै बिश्नोई धरम रै 29 नियमां में 'अमर रखावे थाट' मतलब भेड़ बकरियां नै कतल रै वास्तै नीं भेजौ, उण वास्तै सुरक्षित-संरक्षित राखण री सामाजिक व्यवस्था बणाई ही जकौ आज ई रोटू (नागौर) में देखी जा सकै है।

इणी तरै सूं मेवाड़ रा राणा सांगा, जैसलमेर रा रावल जैतसिंह अर जोधपुर रा राव सातलसिंह, बीकानेर रा राजा लूणकरण, अजमेर रा सूबेदार मल्लूखां अर जोधपुर रा राजा अभयसिंह वन्य जीव संरक्षण अर पेड़ां री कटाई रोकण वास्तै आप आपरै समै में आपरै खेतर में आदेस पारित करिया।

सन 1945 में रियासत बहावलपुर (वरतमान पाकिस्तान) रै नवाब रै परिजनां द्वारा शिकार करियौ जावण सूं बिश्नोईयां रै जबरदस्त विरोध रै पछै नवाब नै बिश्नोई खेतर में वन्य जीव शिकार अर हरा पेड़ां नै काटण री मनाही रौ आदेश जारी करिया। इण प्रकरण में संत कुमार बिश्नोई रौ योगदान रैया हौ।

बिश्नोईयां रै पवित्र धारमिक स्थल जांभोलाव (फलोदी) में अक शिलालेख माथै इण बात रौ उल्लेख है कै जांभोलाव रै ताळाब अर आगोर खेतर माथै किणी तरै रौ कर नीं लियौ जावैला। जिण रौ उपयोग वन्य जीवां अर पालतू पसुवां रै वास्तै करियौ जावैला।

बरस 1947 में देस री आजादी रै पछै रियासतां रौ विलय होवण सूं राजस्थान राज्य री थापना रै पछै वन्य जीव बाहुल्य खेतर मतलब शिकारगाहां नै धीरै-धीरै अभयारण्य अर राष्ट्रीय उद्यान घोसित करिया गया। पण मानव जाति रै अविबकपूरण तरीका सूं वनां री कटाई अर वन्य जीवां रौ शिकार रै परिणाम सरूप एशियाई चीता जैड़ी वन्य जीव प्रजातियां लुप्त होगयी। दूजा जीवां में गोडावण अर सियालगोश री संख्या में घणी कमी आई है। आखिरकार राजस्थान सरकार बरबाद होवती वन्य जीवा संपदा नै रक्षित राखण सारू 'राजस्थान कतिपय वन्य जीवों की सुरक्षा अधिनियम 1950' लागू करियौ। वन्य जीव संरक्षण नै औरू व्यापक आधार देवण सारू राजस्थान वन्य पशु पक्षी सुरक्षा अधिनियम

1951 लागू कियौ गयौ। राज्य में राजस्थान वन अधिनियम 1953 अर वनां में शिकार रैनियम 1957 बणाय'र वन्य प्राणी संरक्षण रै वास्तै केई उपाय करिया गया। सन 1955 में राजस्थान वन्य जीव सलाहकार मंडल रौ गठन करियौ गयौ। राजस्थान वन्य जीव अधिनियम 1955 मांय केई खेतरां में वन्य जीव अभयारण्य घोसित करिया गया। इण पछै वन्य जीव अधिनियम 1972 राज्य में सितंबर 1973 सूं लागू कियौ गयौ। इण अधिनियम री धारा 18, 35 मांय वन्य जीव अभयारण्य राष्ट्रीय उद्यान अर आखेट निषेध खेतर घोसित किया गया। सन 1973 में बाघ रै शिकार माथै पूरण रूप सूं प्रतिबंध लगा'र अर सन 1973 में भारतीय जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 नै राज्य में सितंबर 1973 में लागू करियौ गयौ। इण अधिनियम री धारा 18, 35 अर 37 मांय वन्य जीव अभयारण्य राष्ट्रीय उद्यान अर आखेट निषेध खेतर घोषित करियौ गयौ। भारत सरकार द्वारा सन् 2002 में जैव विविधता अधिनियम लागू करियौ गयौ।

राजस्थान में बिश्नोई धरम रा अनुयायियां द्वारा तौ आपरै धरम गुरु श्री जांभोजी रै बताया गया नियमां री पालना करण वास्तै अपणै आपरौ बलिदान रौ अनूठौ उदाहरण है। गुरु जांभोजी कैयौ कै सूखे वृक्षां री लकड़ी सूं आपरौकाम चलावौ। अदितवार, सोमवार अर अमावस रै दिन किणी तरै रा वृक्ष नै काटणौ मना है। उणां रै बताया मूल धरम—

जीव दया पालणी, रूख लीलो नहीं घावै।
अजर जर जीवत मरै, वै वास स्वर्ग ही पावै।।
अमर रखावै थाट, बैल बधिया न करावै।
पाणी बाणी ईधणी, दूध इतणा लीजै छाण।।

इणमें वे जीवां रै प्रति दया भाव, हरा वृक्ष रै काटण माथै रोक मूक पुवां रै प्रति अमानवीय व्यवहार रौ विरोध, प्रकृति नै स्वच्छ अर संतुलित बणाया राखण सारू पाणी, बाणी, दूध अर ईधण नै ई छाण'र काम में लेवण माथै बल दियौ है ताकि जीव हिंसा नीं होवै। वे जळ, जंगळ, जमीन, जिनावर इत्याद में अटूट संबंध मानता हा।

गुरु जांभोजी रै अलावा बिश्नोई पंथ रा केई संत कवियां प्रकृति विसय माथै खासकर वन्य जीवां रै संरक्षण सारू काम करियौ है, जिण में संत कवि वील्होजी, संत कवि सुरजनदासजी, संत कवि कैसोदासजी, संत कवि परमानंदजी, संत कवि ऊदोजी आद खास है।

संत कवि वील्होजी (सन 1532–1616) रौ जांभाणी काव्य परंपरा में आपरी खास ठौड़ है। वील्होजी जांभाणी साहित्य परंपरा रै उजळा नखतर हा। उणां रौ व्यक्तित्व संत मारग रै वास्तै वरदान सिद्ध हुयौ। वील्होजी बिश्नोई पंथ नै संगठित करण में महताऊ भूमिका निभाई, सागै ई वन्य जीव संरक्षण अर जीव हिंसा रोकण रै संबंध में ई उद्धारक हा। बिश्नोई धरम रै नियमां रै पाळण वास्तै वील्होजी बतीस आखड़ी लिखी। राजस्थानी में आखड़ी रौ अरथ होवै प्रतिज्ञा या नियम।

विश्व रा इण बिगड़ता पर्यावरण नै देख'र चिंतित हा अर पेड़ां री रक्षा सारू चिपकौ आंदोलन जोरौ माथै है पण इण माथै सबसूं पैली काम संत कवि वील्होजी करियौ हौ। वे वन्य जीव संरक्षण अर पर्यावरण रक्षा सारू केई महताऊ नियम बताया जिणमें भेड़ बकरियां नीं मारणी, लीला वृक्ष नीं काटणा, बळद बधिया नीं करणा, पाणी छाण'र पीणौ। संत कवि वील्होजी आपरै ग्रंथ बतीस आखड़ी में लौकिक आचरण री व्यख्या करता थकां जीव हिंसा नीं करण रौ आह्वान करियौ हौ। वे कैयौ कै जीव माथै दया करौ, पाप नीं करौ, खेजड़ी अर हिरण री रक्षा सारू आपरा प्राण देवौ जे बळद नै बधिया करै तौ छुड़ावौ जे मना करै तौ ई जीव हत्या करै तौ खुद रा प्राण दे देवै—

बधिया करै तो बैल जु देख छोड़ाइयै।

वरजत मारै जीव तहां मर जाइयै॥

जीवां रै प्रति प्रेम, दया अर संरक्षण रौ उल्लेख जैड़ा वील्होजी करियौ है वो सरावणजोग अर स्वीकार जोग है।

जांभाणी काव्य परंपरा रा संत कवि केसोजी (वि.सं. 1630–1736) री ई साहित्य साधना घणी व्यापक अर लोक अनुभव माथै आधारित है। वे आपरै काव्य में केई उदाहरणां अर द्रष्टांतां सूं प्रकृति सुरक्षा अर जीव दया रै महताऊ अर मूल्यां नै स्पष्ट करिया है—

जीव दया सुच्य सीनान, राखौ रूख ग्रहौ गुरग्यान॥

वे तौ औ ई कैयौ कै—

जीव दया धरम पत जानौ, सरधा को पत पुन्य बखानौ।

दान उतमै अनं दान पवीत, पात्रन मै पत है जु अतीत॥

जांभाणी काव्य परंपरा रै एक संत कवि सुरजनदासजी (वि.सं. 1640–1748) आपरी वाणी में जीवां रै प्रति दया भाव व्यक्त करिया है। उणां री दीठ में जीव हत्या करणौ अपराध है। जिणरै कारण तीन जलम दुख देखता थकां चौथे में नरक में निवास हुय जावै है—

पुरबले भव कीया पाप, जे कीया ते लागा श्राप।

तीन्य जलम भव दुभर वास, चौथे भवि नरकी निवास॥

संत कवि परमानंदजी (वि.सं. 1750–1845) ई आपरी वाणी में जीव दया रौ उल्लेख करियौ है। वे आपरै दया नीरतरि में प्रसंग में लिखै कै—

बप की दया विचारियै, लख चौवरासी जीव।

ब्रम गीयान धीयान वड़, जीव दया मांहि सीव॥

संत कवि ऊदोजी नैण रै सबदां में—

करे रूख प्रतापाल, खेजड़ा रखत रखावै।

बकरा पालै थाट कर, तणी नही रखावै।

जीव मातरो देख, जाय के आण दिरावै।

आण लोप जे मार है, अपणो सीस दिरावै॥

इण सूं जांभाणी साहित्य परंपरा अर बिश्नोई पंथ में प्रकृति रै प्रेम अर वन्य जीवां रै संरक्षण (जीव दया रै रूप में) ढेरां प्रसंसनीय अर अनुकरणीय उदाहरण विद्यमान है।

वृक्ष अर जीव रक्षा री भावना रै कारण ई वृक्षां री बढोतरी अर हिरणां रा झुंड आज जांभाणी पंथ री पहचाण रौ आधार बणै है। इण संसार में केई लोगां समै-समै पशु पक्षियां री रक्षा सारु अपणै जीवण रौ बलिदान दियौ है। आ परंपरा किणी पंथ या वर्ग विसेस में जंगल अर वन्य जीवां रै रक्षा सारु प्राण निछावर करण री नीं रैयी है। अैड़ी परंपरा जांभाणी पंथ में ई देखी जाय सकै। जांभाणी अर बिश्नोई पंथ रौ प्रकृति प्रेम आज दुनिया रा आदर्श अर पर्यावरण रौ प्रतीक बण गियो है।

बिश्नोई वन अर वन्य जीवां री सुरक्षा, संरक्षण सारु हर समै तैयार रैवै। आपरी संतान री तरै उणां नै पाळै। बिश्नोई समाज रा लोग कानून सूं नीं बिश्नोइयां सूं डरै है। शिकारी जैड़ा शीर्षकां सूं सुशोभित प्रदेश प्रचलित प्रमुख समाचार पत्र ई प्रकृति रै मूल्यां नै बढावौ देवै है।

जांभाणी संत काव्य परंपरा रा संत कवियां रै सबद अर वाणी रौ ई प्रभाव है कै वरतमान में बिश्नोइयां वन्य जीवां रै संरक्षण वास्तै आपरा प्राण निछावर जैड़ा कृत्य ई करिया है। जांभाणी साहित्य अकादमी

सू. प्रकाशित पुस्तक 'विश्वनोई पंथ और साहित्य' में वन्य जीवां री रक्षा वास्तै दिया गया बलिदानां रौ विस्तार सू. वरणन कियौ है। डॉ. बनवारीलाल साहू लिखै कै विश्वनोई इतिहास अक कांनी वन्य जीवां री रक्षा सारू अपणै जीवण रौ बलिदान करण वाळां सू. भर्यौ पड़ियौ है। उठै ई दूजा कांनी अैड़ी सैकड़ां घटनावां जकौ विश्वनोई जीव दया री भावना सू. प्रेरित हुय'र वन्य जीवां नै शिकारियां रै चंगुल सू. छफडवाया है अर उणरै विरुद्ध मुकदमा दरज करवाया है। इण पुनीत कामां में विश्वनोई महिलावां रौ ई घणौ सक्रिय योगदान है। वे हिरणां रै अनाथ बच्चां नै आपरौ दूध पिलाय'र पाळै है। केई महिलावां आपरै हांचळ रौ दूध पिलाय'र हिरणां रै बच्चां री रक्षा करै है।

इण संसार में केई महापुरुस हुया है जिका समै समै माथै पशु पक्षियां री रक्षा सारू आपरै जीवण रौ बलिदान दियौ पण किणी संप्रदाय विसेस या वरग विसेस में पशु पक्षियां री रक्षा सारू आपरै जीवण रौ बलिदान करण री परंपरा नीं रैयी है। वन्य प्राणियां री रक्षा सारू आपरै प्राणां नै निछावर करण री परंपरा केवल विश्वनोइयां में सरू हुई अर आज ताई देखी जा सकै है। पर्यावरण संरक्षण री दीठ सू. जांभोजी साहित्य परंपरा अत्यंत उपयोगी अर मूल्यवान है। आज विश्व नै इण परंपरा रौ अनुकरण री जरूरत है। इणी में मानव कल्याण निहित है।

संदर्भ ग्रंथ

1. पर्यावरण संरक्षण एवं खेजड़ली बलिदान, डॉ. बनवारीलाल साहू, पृ. 13
2. जम्भ ज्योति सं. मांगीलाल विश्वनोई, बरस 25, अंक 2 अक्टूबर 2016, पृ. 22
3. श्री जांभोजी और जंभवाणी मीमांसा, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, पृ. 603
4. वील्होजी की वाणी, डॉ. कृष्णलाल विश्वनोई, पृ. 258
5. पोथो ग्रंथ ज्ञान, सं. कृष्णानंद आचार्य, पृ. 75
6. विश्वनोई पंथ और साहित्य, डॉ. बनवारीलाल साहू, पृ. 62-63
7. गुरु जांभोजी एवं विश्वनोई पंथ का इतिहास, डॉ. कृष्णलाल विश्वनोई
8. जम्भसार, साहबराम राहड़, भाग 1-2, वि.सं. 1978
9. जागती जोत, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर, बरस 8 अंक 1
10. जांभोजी विश्वनोई सम्प्रदाय और साहित्य, भाग 2, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी